REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

डॉ.त्रिभुवननाथ शर्मा 'मधु' की कविताओं में अरविन्द दर्शन

Dr. Balaji Naik L.
Faculty, Department of Hindi, Jnanabharathi Campus,
Bangalore University, Bangalore, Karnataka.

भूमिका

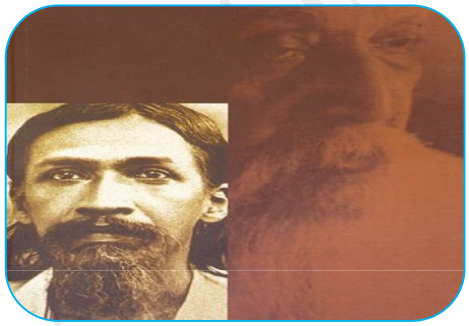

डॉ. त्रिभुवननाथ शर्मा 'मधु' की कविता बिलकिल मधु की तरह ही मधुर है । इन्होने कई काव्यों की रचना की है, जिनमें प्रमुख है–'मधुमुक्तक, व्रज–दान, परशराम की इच्छा, रावण का विक्षोभ, समस्यापूर्ति–संग्रह, महिलाओं के गीत' आदि । इनमें से कथिपय काव्यों पर अरविन्द दर्शन का प्रभाव परिलक्षित होता है, जिनका विवेचन यहाँ किया जा रहा है । भारतीय दर्शन की सभी विशेषताएँ इनकी कविता में दिखाई पडती है । ये प्रमुखतः वीरता, देशप्रेम और सांस्कृतिक गरिमा के कवि हैं ।

'मधु'जी की कविता पर अरविन्द दर्शन के 'आत्म–गरिमा, सत्य–तत्व, सांस्कृतिक तत्व, आत्म परमात्मा की एकता, परम–सत्ता की विशेष–कृपा' आदि तत्वों का प्रभाव पडा हैं । अरविन्द कहते हैं कि परमात्मा की कृपा से ही हमें समस्त सिद्धियाँ प्राप्त होती है । आत्मा विभिन्न साधनों के द्वारा अंत में परमसत्ता के दर्शन कर उनमें लीन हो जाती है, इस तत्व को 'मधु' ने सुन्दर अभिव्यक्ति प्रदान की है । अरविन्द ने अपने दर्शन में राष्ट्र–प्रेम एवं स्वतंत्रता तत्वों को स्थान दिया है । इन तत्वों का प्रभाव कवि 'मधु' जी पर दृग्गोचर होता है ।

तपस्या की दार्शनिक गरिमा

अरविन्द दर्शन में तपस्या, योग, याग, ध्यान, मनन आदि को स्थान दिया गया हैं । इस दर्शन से प्रभावित कवि 'मधु''परशुराम की इच्छा" काव्य में यह घोषित करते हैं कि तपस्या से ही मानव परम–शक्ति को प्राप्त कर सकता हैं । तपस्या की दार्शनिक सिद्धी से परशुराम आश्रम पर आक्रमण करनेवाले और अपने पिता जमदग्नी पर द्रोह करनेवाले राजा पर आक्रमण करते हैं और अपने दार्शनिक शक्ति से पिता को पुनःजीवित करते हैं । पिता की आज्ञा मान कर अपनी माता 'रेणुका' का वध करते हैं तथा राजा जनक से प्राप्त वर से माता रेणुका को पुनः जिलाते हैं । शिवधनुष प्रसंग में वे राम के असली स्वरूप को पहचानने हेतु उनका विरोध करते है और अंत में शिवधनुष को उठानेवाले राम को वह धनुष प्रदान कर तपस्या करने चले जाते हैं । समत्व की महिमा के सत्य का दर्शन करना ही परमात्मा का लक्ष्य है । कवि 'मधु' द्वारा वर्णित इस प्रसंग पर अरविन्द के सत्य दर्शन का प्रभाव पड़ा है।

भगवान की शक्ति का वर्णन

अरविन्द परमात्मा को अपार शक्ति संपन्न, अनंत एवं सर्वांतर्यामी मानते हैं । अरविन्द दर्शन के इस तत्व का प्रभाव 'मधु' जी की कविता पर पडा है । वे भी परमात्मा को ब्रह्म, विभु, पतीत–पावन प्रभु, कर्ता, हर्ता, अगम, अनवद्य एवं अनंत मानते हैं ।

ब्रह्म विभुव्यापक जय कथिपय
पूत पावन प्रभु परम परेश
जयति कर्ता हर्ता निबोध
अगम अनवद्य अनन्त अगाध । [1]

सगुण–निर्गुण स्वरूप

अरविन्द की तरह कवि'मधु' भी भगवान के सगुण और निर्गुण दोनों रूपों को मानते हैं । सगुण और निर्गुण दोनों का सुन्दर समन्वय इनके काव्य में दृगोचर होता है ।

सगुण–निर्गुण जय मंगल मूल
समापक व्यापक भव भय भूल
अलख अतरहित विशद विराट
अखिल चराचर के सम्राट ।[2]

कवि 'मधु' जी अपने परम प्रभु को समापक, व्यापक, अलख, विशद, विराटप्रभु और सकल चराचर के सम्राट मानते हैं । भारतीय दर्शन में निहित सगुण–निर्गुण का समन्वय–तत्व को अरविन्द व्यापक रूप देते हैं, जिनका प्रभाव 'मधु' की कविता पर दिखाई देता हैं । अरविन्द की तरह कवि 'मधु' जी भी परमात्मा को ज्योति स्वरूप मानते हैं।

सत् की खोज: दर्शन का लक्ष्य

अरविन्द यह बताते है कि 'सत्'का अन्वेषण ही दर्शन का लक्ष्य है । 'सत्' के प्रसार से संसार सुखी एवं सुन्दर बनता है । स्त्री पुरुष के सहयोग से ही 'सत्' का प्रसार संभव है । अरविन्द की तरह 'मधु' जी भी कहते है कि 'सत्' की खोज ऋषि–मुनि कर चुके हैं । जमदग्नि के आश्रम में सर्वत्र सत् की व्याप्ती रही । 'सत्' के बिना दर्शन की कल्पना ही नहीं कर सकते । इसलिए अरविन्द ने श्री माता को अपने तात्विक अनुष्ठानों में समान स्थान दिया था । 'मधु' जी 'परशुराम की इच्छा'नामक कविता में बताते है कि जमदग्नि भी रेणुका को समान स्थान देते हैं–

जग विदित रेणु ऋषि की कन्या शुभ संगी थी इनकी
विदुषि विनीत रेणुका अचल अर्धांगी थी इनकी
मुनि सफल सिद्धि साधक थे सत् की खोज पा चुके थे
पावन प्रतिभा थी प्राप्त अमित बल ओज पा चुके थे ।[3]

परशुराम की इच्छा

परशुराम के जीवन का गायन करते हुए उनकी तपस्या, गरिमा एवं दार्शनिक चेतना का वर्णन 'परशुराम की इच्छा'काव्य में किया गया है । अपनी दार्शनिक विभूति के बल पर परशुराम समस्त सिद्धियों को प्राप्त करते हैं । दार्शनिक सिद्धियों का विवेचन करते हुए अरविन्द से प्रभावित 'मधु' कहते हैं कि तपस्या से क्या नहीं पाप्त कर सकते ?

'परशुराम की इच्छा' का दार्शनिक लक्ष्य अनीति का अंत हैं । सत्य का निरूपण भी दर्शन का उद्देश्य होता है। इसलिए अरविन्द दर्शन 'सत्य दर्शन' कहलाता है । अरविन्द दर्शन से प्रभावित 'मधु' जी शिवधनु–भंग प्रसंग में इस सत्य का उद्घाटन करते हैं । रावण की अनीति का अंत करने हेतु श्री राम का अवतार होता है । शिवधनु–भंग से विचलित परशुराम पहले राम का विरोध करते हैं । इस प्रसंग में राम के अवतार का निरूपण भी परशुराम का दार्शनिक लक्ष्य है । राम के अवतार का सत्य जानकर परशुराम अत्यंत आनंदित होते हैं । इसलिए अंत में परशुराम राम को शिव–धनु सौंपते हैं ।

जयति बिमल विभास व्योम में हुए देव उल्लास विभोर
अनायास चढ गई राम के छूटे ही धन्वा की डोर ।[4]

सृष्टि विश्लेषण

श्री अरविन्द विश्व के समस्त तत्वोंको परमात्मा की सृष्टि के अंग मानते हैं । कोई ऐसी वस्तु नहीं जिसमें परमसत्ता की सृष्टि–कला की कांति न हो । अरविन्द दर्शन के इस तत्व से प्रभावित कवि'मधु' भी कहते हैं कि तरू, लता, गुल्म नदी आदि सभी सृष्टि के ही अंग हैं ।

यह प्राकृतिक प्रसंग है
सब का समुचित ढंग है
तरू तृण कीट पतंग है

सभी सृष्टि के अंग हैं ।[5]

सृष्टि के समस्त तत्वों में परमसत्ता की छवि दिखाने का प्रयत्न उपर्युक्त प्रसंग में हुआ है ।

चेतना की व्याप्ति

अरविन्द दर्शन में चेतना की व्याप्ति का निरूपण किया गया है । अरविन्द कहते हैं कि कोई ऐसा स्थान या वस्तु नहीं जिसमें परमसत्ता की व्याप्ति नहीं हो । अरविन्द दर्शन से प्रभावित कवि 'मधु' चेतना की व्याप्ति का वर्णन करते हुए 'सीपि और मोति' कविता में कहते हैं कि पर्व में नव प्रभा व्याप्त है । यह परमात्मा की कांति हैं, चेतना सबमें है । समस्त संसार पारमार्तिमक चेतना से उज्वलमान है । भाल सुन्दुरी से ललित प्राची गर्व का अनुभव करती हैं ।

नव प्रभा पर्व में थी
चेतना सर्व में थी
भाल सुन्दरी कियें
प्राची अब गर्व में थी ।[6]

अरविन्द दर्शन से प्रभावित कवि'मधु'अपने काव्यों में यह स्पष्टतः कहते हैं कि दार्शनिक गुरुओं की कृपा से ही हमको सुख–संपदा एवं महिमा–गौरव–कीर्ति प्राप्त होती है । कवि 'मधु' जी अरविन्द दर्शन के इस चेतना तत्व से भी प्रभावित हुए हैं । वे कहते हैं कि परमसत्ता संसार के प्रत्येक तत्व में चेतना की संव्याप्ति का चिरदर्शन कराते हैं ।

आध्यात्मिक दान

'वज्र–दान' काव्य में कर्ण इन्द्र को अपने कवच कुंड़ल का दान देता है । वह साधारण दान नहीं बल्कि आध्यात्मिक दान हैं । अपने प्राणों की चिंता न करके अपने शत्रु को भी दान देनेवाले कर्ण स्वयं महान दार्शनिक, सर्वश्रेष्ठदानी है । अरविन्द जिस प्रकार 'बाजी प्रभु, सावित्री' आदि कविताओं में दार्शनिक चेतना दिखाते हैं, उसी प्रकार कवि 'मधु' जी "वज्र–दान" काव्य में कर्ण के दान को आध्यात्मिक दान के रूप में चित्रित करते हैं। कवि कहते हैं कि कर्ण दुरभि–संधि भूलकर संपूर्ण हृदय से इन्द्र को अपना कवच–कुंडल का दान करते हैं ।

खोल कर हाथ खोल कर वक्ष
दान करना है जिसका लक्ष्य
न जिसको दुरभि–संधि का ज्ञान
शत्रु को भी जो देता दान ।[7]

अरविन्द की तरह कवि 'मधु'जी दार्शनिक त्याग, दार्शनिक–दान आदि का वर्णन कर, दार्शनिकता को वे विशाल प्रफुल्लरुप प्रदान करते हैं । कर्ण के इस दान में आध्यात्मिक चेतना निहित है, जिसके महत्व को अंकित करनाही कवि का लक्ष्य है ।

पाप–पुण्य विवेचन

अरविन्द दर्शन में पाप–पुण्य का प्रांजल विश्लेषण हुआहै । इस दार्शनिक विवेचन में अरविन्द सर्वत्र पुण्य की विजय और पाप की पराजय की घोषणा करते हैं । अरविन्द दर्शन से प्रभावित 'मधु'जी "वज्र–दान"काव्य में अरविन्द की स्फूर्ति के साथ पाप–पुण्य का विवेचन प्रस्तुत करते हैं । 'इन्द्र' जानते हैं कि कर्ण से कवच–कुंडल ले लेंगे,तो वह निर्बल हो जाएगा,फिर भी इस पाप कृत्य के लिए वह संसिद्ध हो जाते हैं । हर पाप के आरंभ में सब के मन में यह भय उत्पन्न रहता है कि कहीं पाप की वासना फैलन जाय ।'इन्द्र' के मन में भी यह भय है और वह सोचता है कि यह भय कहीं विकट समस्या न बन जाय । इस दार्शनिक चेतना से अनुप्राणित यह तथ्य इन्द्र के चरित्र में दिखाया गया है । कवि कहते हैं कि –

सब को इन्द्र देव की इच्छा प्रकट सुनाई जाती है

निर्धारित क्रम होता है योजना बनाई जाती है
भय है किन्तु इन्द्र के मन में कहीं समस्या विकट न हो
मृत्यु लोक में वासव की यह पाप वासनाप्रकट न हो ।[8]

अपने इस पाप से मुक्त होने हेतु इन्द्र दान ग्रहण करने के उपरान्त कर्ण को वज्र कर देता है ताकि पुष्य की प्राप्ति हो।

वेदोंकी महत्ता

'मधु–मुक्तक' काव्य में कवि 'मधु' जी वेद, शास्त्र आदि की महत्ता घोषित करते हैं । दर्शन का आरंभ वस्तुतः वेदों से होता हैं, इसलिए अरविन्द अपने दर्शन में वेदों की महत्ता का निरूपण करते हैं । अरविन्द दर्शन से प्रभावित 'मधु' भी वेदों को सर्वोच्छ मानकर घोषित करते हैं कि वेदज्ञ कभी अपूर्ण अवस्था में जीवन नहीं गाँवता हैं ।

वेदों का अध्ययन वर्ग शत जीवन दाता है
कहते सुनते रहते अधीन भी भेद न आता है
यह परम अध्ययन भरा मंत्र जीवेशतम का है
वेदज्ञ अपूर्ण अवस्था में जीवन न गँवाता है ।[9]

सर्वमंगल कामना

अरविन्द कहते हैं कि सर्वमंगल कामना दर्शन की मूल धातू हैं । ज्ञानी सच्चे दार्शनिक बन कर समस्त भेद–भावना से मुक्त होकर सारे संसार की मंगलकामना करते हैं । इस तत्व को अरविन्द अपने दर्शन में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करते हैं । अरविन्द के इस दार्शनिक तत्व से प्रभावित 'मधु'जी कहते हैं कि ज्यों ज्यों ज्ञान बढ़ता जाता हैं, त्यों त्यों सच्चे दार्शनिक बन कर ज्ञानी सर्वमंगल कामना करते हैं । वे कहते हैं –

सबकी मंगल कामना हृदय ठानी है
सत्संग साधना मन की अनुमानी है
जो स्वयं धार्मिक बन धर्म सिखलाता
विद्वान वही, वह ही गुरू ज्ञानी है ।[10]

कवि 'मधु'जी ऐसे ही दार्शनिक को विज्ञानी एवं ज्ञानी मानते हैं ।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि अरविन्द दर्शन में निहित भगवत स्मरण की महत्ता 'मधु' की कविता में स्पष्टतः ध्वनित होती हैं । यह निरूपित किया गया है कि कवि 'मधु' प्रार्थना को दर्शन की एक विशेष सीढी मानते हैं । अरविन्द दर्शन के अनुसार आचरण एवं आत्म–शुद्धि से साधना बनती है । इस तत्व के साथ–साथ अरविन्द दर्शन के सभी तत्वों को कवि 'मधु'जी अपने काव्यों में ध्वनित करते हुए काव्यात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं ।

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि मधु की काव्य कृतियों पर अरविन्द दर्शन के विभिन्न तत्वों का स्पष्ट प्रभाव पडा हैं । अरविन्द दर्शन के अवतारवाद, सत् के प्रसार और असत्य का अंत, दर्शन का परम–लक्ष्य, सत्य का समुध्धाटन, अनीति का अंत, जीवन का तात्विक उद्धेश्य, गुरूजन भक्ति, लोकजीवन पर दार्शनिकों का प्रभाव आदि दार्शनिक तत्वों से प्रभावित कवि 'मधु'जी उन तत्वों का निरूपण करते हुए अपने काव्य को अभूतपूर्व वैश्विकता पदान करते हैं ।

संदर्भ–सूची

1) 'परशुराम की इच्छा'– **डॉ.** त्रिभुवननाथ शर्म मधु : पृ.सं. 12,.13,27,93,34

2) 'सीपी और मोति'– **डॉ.** त्रिभुवननाथ शर्म मधु : पृ.सं. 72

3) 'वज्र–दान'– **डॉ.** त्रिभुवननाथ शर्म मधु : पृ.सं. 13, 26

4) मधु–मुक्तक – **डॉ.** त्रिभुवननाथ शर्म मधु : पृ.सं. 18, 20

LBP PUBLICATION